.....

दुनिया में ऐसे कई सवाल है जो पूछने के लिये तो नहीं बने हैं। एक सवाल तो ऐसा है जो हम रोजमर्रा की जिन्दगी में हज़ारों बार सुनते है और हज़ारों बार पूछते हैं। "कैसे हैं आप ?", "क्या हाल है? ", "और कैसा चल रहा है ?", ये प्रश्न अगर किसी बीमार से भी पूछ लिया जाए तो तो उसका उत्तर भी होगा " ठीक है।" कई बार तो हम इस जवाब को ही सवाल के रुप में पूछ लेते हैं जैसे कि "और ठीक है?", "सब ठीक चल रहा है", "हाल-चाल सब बढ़िया"। समय के साथ जैसे बहुत सी चीज़े अपने मतलब खो चुकी हैं, उन्हीं में ये सवाल भी शामिल है। शायद हम आजकल किसी को बताना ही नहीं चाहते कि हम ठीक है या नहीं। ना बताने के भी कई कारण हो सकते हैं। शायद हम डरते हैं कि कहीं हम सच्चाई बताने से हँसी का पात्र न बन जाए या फिर कमज़ोर न साबित हो जाए या फिए कई बार ऐसा भी लगता है कि सामने वाले के पास हमारी समस्या का हल तो होगा नहीं फिर बता के क्या लाभ। खैर छोड़िए इन सब बातों को। ऐसी बातों का मतलब ही क्या जिनके मायने व्यक्ति विशेष के साथ बदलते रहते हों। शायद यही कारण है कि मैंने इस कहानी को कोई शीर्षक नहीं दिया है।

घटना कुछ महीने पहले की है। ठीक से याद नहीं, शायद छुट्टी का दिन था। मौसम ठंडा था, हल्की हल्की बरसात पत्तों से लड़ रही थी। पेड़ो ने मानो ठान रखी थी कि बूंदो को धरती तक नहीं पहुंचने देंगे। बूंदे बेताब थी और धरती प्यासी और निराश। मैंने बरसात का पक्ष लिया और पेड़ की डाली को ज़ोर से हिला दिया। मेरी गलती बस इतनी थी कि मैं पेड़ के नीचे खड़ा था और धरती के साथ साथ मेरी भी प्यास बुझ गई। मैं अपनी ही मस्ती में खोया हुआ था कि मुझे पता भी नहीं चला कि कब सुमित मेरे पास आकर खड़ा हो गया। बारिश और साथी का एक साथ होना मज़े को दोगुना कर देता है। लेकिन शायद इस जोड़ी का मकसद कुछ और ही था। सुमित की आँखे सूजी हुई थी। आँख सूजी होने के भी कई वजह हो सकते हैं। हो सकता है कि सामने वाला सारी रात सोया नहीं है या मधुमक्खी या कीड़े ने काट लिया हो। मैनें उससे कुछ पूछा नहीं। मुझे लगा शायद उसे कुछ देर के लिए अकेला छोड़ दूँ। पूछता भी तो क्या पूछता। मैं तो ये फैसला भी नहीं कर पा रहा था कि उसके गालों पर पानी की बूंदे आँसू है या बारिश। वो भी चुप-चाप अपने कमरे में चला गया। पिछले पांच मिनटों मे वक्त ने मानो जैसे करवत ले ली हो। कहाँ उमंग, उत्साह और मस्ती और कहाँ चिंता, डर और बेचैनी। जो बूंद मुझे कुछ देर पहले शांति और संतुष्टि का एहसास करा रही थी, वही अब मुझे चुभने लगी थी। मैं बरसात से बचने के लिए छत की ओट में आ गया। ज़्यादा फिक्र की बात तो नहीं थी क्योंकि ऐसा पहले भी कई बार हुआ था। मैं फिर से बारिश की बूंदो में वो चैन ढूंढ़ने लगा। लेकिन बारिश को भी मेरा साथ पसंद नहीं आया। रूकी बरसात में जब खुद को अकेला पाया तो सुमित की चिंता सताने लगी। मैं उसके कमरे की

ओर चल दिया। चलते-चलते अचानक पैर के नीचे कुछ कपड़े जैसा महसूस हुआ। रोशनी कम थी, मैनें उसे उठाया तो देखा की वो शाम का अखबार है। छत से टपकते पानी ने अखबार को एक

तरफ से धो दिया था। अखबार की सबसे पहली खबर थी-दोस्त ने ली दोस्त की जान। गुस्से में अखबार को मैने टेबल पर पटक दिया। अखबार से तो जैसे मन सा उठ गया हो। आधी से ज़्यादा खबरें तो उनकी खुद की बनायी होती हैं। मैं सुमित से मिलने उसके कमरे की तरफ चल पडा।

जब कई बार ज़ोर-ज़ोर से कमरा खटखटाने के बाद भी उसने दरवाजा नहीं खोला, तो मेरे होश उड़ गए। भरी आँखो से मैं उसे पुकारता रहा लेकिन अन्दर से कुछ आवाज़ न आई। मदद के लिए मैंने अपने एक दोस्त को बुला लिया। वो देखते ही भाँप गया कि कुछ गड़बड़ है। जब खटखटाने से बात ना बनी तो हमने दरवाजा तोडने का फैसला किया। हम दरवाज़ा तोड़ने ही जा रहे थे कि अन्दर कुछ हलचल हुई और अगले ही पल सुमित ने दरवाज़ा खोल दिया। जान में जान आ गई। सारा डर हैरानी में बदल गया। हँसती हुई भीगी आँखो से मैने उसे कहा कि मुझे लगा कि तूने कहीं फांसी तो नहीं लगा ली। वो मुस्कुरा कर रह गया। वो या तो गहरी नींद में था या गहरी सोच में, दोनो ही चीज़े इंसान को बुत जैसा बना देती हैं। अब चिंता दूर हो चुकी थी और मन भी शांत था। मैं अपने कमरे में सोने चला गया।

सोने से पहले हर कोई एक अच्छी सुबह की कामना करता है। मैने भी ऊपरवाले का नाम लिया और बिस्तर पर लेट गया। मन की थकावट शरीर की थकावट से कई ज़्यादा मुश्किल होती है। इसलिए पता ही नहीं चला कि कब आँख लग गई।

सूरज अभी पूरा भी नहीं चढ़ा था कि कोई मेरा दरवाजा ज़ोर-ज़ोर से खटखटाने लगा। एक पल तो मुझे लगा कि सुमित रात का बदला ले रहा है। लेकिन दरवाजा खोला तो मंज़र कुछ और ही था। वो सुमित की लाश को बाहर निकाल रहे थे और पंखे से लिपटी हुई रस्सी को सुलझा रहे थे। मेरे आँसू जम गए और शरीर जैसे बेजान हो गया था। मेरी उलझन ये न थी कि इस घटना का एक कारण मैं था या नहीं, बल्कि दुविधा यह थी कि मैं उसे जीने की राह न दिखा पाया या मैने उसे मरने का रास्ता बता दिया। मैं नहीं जानता था कि उसने ऐसा क्यों किया। दुख इस बात का था-मैं उसे रोक न सका |शायद उसके अकेलेपन ने उसे मार डाला था। अगली रात जब मुझे नींद नहीं आई तो मैंने अखबारउठाया। उसमें ये पंक्तियाँ लिखीं थी –

क्यूं कहते हो मेरे साथ कुछ भी बेहतर नही होता,
सच ये है के जैसा चाहो वैसा नही होता,
कोई सह लेता है,कोई कह लेता है,
क्यूँकि ग़म कभी ज़िंदगी से बढ़ कर नही होता,
आज अपनो ने ही सिखा दिया हमे,
यहाँ ठोकर देने वाला हर पत्थर नही होता,
क्यूं ज़िंदगी की मुश्क़िलो से हारे बैठे हो,
इसके बिना कोई मंज़िल, कोई सफ़र नही होता,
कोई तेरे साथ नही है तो भी ग़म ना कर,
ख़ुद से बढ़ कर कोई दुनिया में हमसफ़र नही होता !

- अमर 'ग़ालिब' जावा

अनोखी दुनिया C.S.की

विज्ञान आज समान्तर ब्रह्माण्ड तक की बात कर रहा है। मैं कह नहीं सकता कि इसमें कितनी यथार्थता है परन्तु यदि यह सत्य है तो हम असंख्य संसारों से रूबरू होने वाले हैं| इसका अनुमान लगाना कठिन है लेकिन इससे पहले कि विज्ञान सत्यता परिमार्जित करे, मैंने दो समान्तर संसारों का अनुभव किया है, जहाँ एक ओर पुलिस-आतंकवादी अपने रण-क्षेत्र में एक दूसरे का सामना कर रहे हैं, अस्त्र-शस्त्रों से एक-दूसरे को न जाने कैसे-कैसे मार रहे हैं और दूसरी ओर है--- क्या आप अनुमान लगा सकते हैं?

जी हाँ दूसरी ओर है हमारे IIT की LAN जनता। और हाँ जिस दुनिया की मैं बात करने जा रहा हूँ वो है दुनिया काउन्टर-स्ट्राइक (CS) की।

मन में CS के प्रसंग में अपना दृष्टिकोण रखने की अभिलाषा पल्लिवत हुई। क्या ये सिर्फ़ मनोरंजन है या फिर उससे कुछ बढ़कर? इसी प्रश्न की तलाश में मैंने अचेतन मन रूपी पक्षी को असीम खुले आकाश में विद्यमान समीर रूपी जलधि की लहरों में गोते लगाने का मौका दिया।

इस खेल में अपने हाथ आजमाने वाले आपको काफ़ी लोग मिल जाएंगे। लोग इसे मनोरंजन के रूप में शुरु करते हैं और बाद में अपने नाम को मशहूर करने के लिये। कुछ लोगों को देखकर ऐसा लगता है मानो CS उनकी रग-रग में बसा हुआ है। विभिन्न प्रकार के नामों से एक-दूसरे से भिड़ते हैं। कोई अपने को maddy बोलता है तो कोई dex कहीं leo, king, defrag तो कहीं chill, xstream, scorpion. CS खेलने वालों का कहना है कि ये मनोरंजन है परन्तु मनोरंजन यदि ४-५ घण्टों से भी अधिक चले तो क्या इसे मनोरंजन कहना उचित होगा? कुछ का कहना है कि यह उनकी मानसिक थकान मिटाने में सहायक है लेकिन शारीरिक व्यायाम का क्या?

जो भी हो CS खिलाड़ियों के विचार में यह एक टॉनिक है शायद। या फिर एक दूसरे से पहचान बनाने का क्रियास्थल। असली नाम जानो या ना जानो CS - name is always well known. और उस नाम के स्तर को कायम रखने के लिये अपने कीमती समय को न्यौछावर कर देते हैं। दोस्त हो या कोई अनजान, दिन हो या रात, डिनर हो या नाश्ता सभी एक ही खेत की मूली नज़र आते हैं।

मानसिक व्यथा को कम करने के बजाय कहीं उसे बढ़ाता तो नहीं | शायद हाँ, यदि यह एक खेल से बढकर समझा जाएगा। और हाँ, क्या ये समय की बरबादी नहीं? शायद है, परन्तु खेलने वालों की नजर में बरबादी नहीं क्या? आखिर वे भी सोचते होंगे। ऐसा तो नहीं है कि वे एक अनजान बच्चे की भाँति मासूमियत से कुछ नहीं सोचते बस खेलते जाते हैं। शायद ये अन्य खेलों में अपरिपक्व छात्र के लिये मनोरंजन का एकमात्र साधन है या शायद अपने परिष्कृत रूप को लोगों के सम्मुख रखने की एक अभिलाषा।

-राजेश चौंसाली

लोकपाल बिल ज़रूरी है यार

मोच के लिए जैसे balm होता है
वैसे लोकपाल बिल ज़रूरी होता है
ऐसे लोकपाल बिल ज़रूरी होता है

कोई खुद से घर आके पासपोर्ट पकड़ाए
कोई License के लिए चक्कर कटवाए
एक तेरी Problems की Caring करे
और एक तुझसे Bribe लेके Setting करे

कोई Nature से Honest.. कोई Corrupt होता है..
इसलिए लोकपाल बिल ज़रूरी होता है

एक दिन भर काम करे और कुछ भी ना कमाए
एक कुछ भी काम ना करे और ढेरों कमाए

Lobbying को कोई घूमता फिरता Satellite
नेताजी चाहे तो करदे सब Alright
कोई Effortless, कोई Forced होता है
इसलिए लोकपाल बिल ज़रूरी होता है

पासपोर्ट Agent, कोई पासबुक Agent
कोई Bike के License वाला Driving Agent
वोटर कार्ड वाला वोटिंग Agent
कोई सिनेमा हॉल वाला Booking Agent

हर्षद स्केम ..चारा स्केम
2G स्केम ..CWG स्केम
वोट स्केम ..स्टॉक स्केम
सत्यम स्केम ..बोफोर्स स्केम
ये स्केम ..वो स्केम
स्केम ..Agent

Everybody.. Subsidy
A To Z
सुन सुन के काण्ड भेजा Roast होता है
इसलिए लोकपाल बिल ज़रूरी होता है
इसलिए लोकपाल बिल ज़रूरी होता है

{GUYS GUYS.. अन्ना ..अन्ना ..अन्ना..
लोकपाल बिल ज़रूरी है यार}

-निमित जैन

संपादक पद का पैगाम

" जागो सुनहरा संदेशा आया है,
संपादक पद का पैगाम लाया है,
जिसने गहन चिंतन-मनन आज़माया है,
उसने ही यह प्रतिष्ठित पद पाया है,

करो आवेदन, दिखाओ अपनी साहित्यिक कलाकारी,
उपलब्धियों और रचनाओं का ज़िक्र बढ़ाएँगे दावेदारी,
रखो असीम विश्वास, पड़ोगे सबपर भारी,
आत्मविश्वास और रचनात्मकता से ही जाती है बाज़ी मारी!"

संपादक पद के लिए इच्छुक छात्र निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के साथ आवेदन करें :-

1. अपनी पसंद के परिसर-वृतांत पर पत्रकीय विवरण दें
2. अपनी कोई भी तीन रचनाएँ प्रस्तुत करें
3. अपनी रचनात्मक उपलब्धियों का ज़िक्र करें
4. व्यक्तिगत विवरण (नाम, कमरा संख्या, छात्रावास इत्यादि) देना न भूलें

निम्नलिखित पते पर आवेदन करें :-

सत्येंद्र 'भोजपुरी'	राजेश चौंसाली
#2011, अलकनन्दा	# 439, गोदावरी
9952092557	9940052238

tfe.hindi.iitm@gmail.com